हरियाली से खुशहाली की अनूठी पहल

बाबा मायाराम

इन दिनों मध्यप्रदेश के बैतूल और हरदा ज़िले में भूख, कुपोषण के खिलाफ और पर्यावरण सुधार के लिए हरियाली-खुशहाली की अनूठी मुहिम चलाई जा रही है। इसे वन विभाग नहीं, आदिवासी चला रहे हैं। इसके तहत खेती-बाड़ी, और जंगल की खाली ज़मीन पर फलदार और छायादार वृक्ष लगाए जा रहे हैं ताकि कुपोषण से निजात मिल सके, आमदनी बढ़ सके और रूखे-सूखे जंगल को फिर से हरा-भरा बनाया जा सके, पर्यावरण सुधारा जा सके और जैव विविधता का संवर्धन और संरक्षण किया जा सके।

बैतूल ज़िले के चिचोली और शाहपुर विकासखंड में आदिवासी इस मुहिम में जुटे हुए हैं। यह मुहिम 24 जुलाई से शुरू हुई है, जो 30 सितंबर तक चलेगी। इसके तहत चीरापाटला गांव में 24 जुलाई को, भौंरा में 5 अगस्त को और चूनाहजूरी में 20 अगस्त को सैकड़ों की तादाद में आदिवासी एकत्र हुए। आदिवासियों ने कावड़ में पौधे सजाकर पूरे बाज़ार में जुलूस निकाला। हर व्यक्ति के हाथ में दो फलदार पौधे थे। सामूहिक रूप से सैकड़ों पौधों का रोपण किया गया। यहां सक्रिय श्रमिक आदिवासी संगठन और समाजवादी जन परिषद द्वारा इस सकारात्मक मुहिम को चलाया जा रहा है।

आदिवासियों के अधिकारों के लिए बरसों से सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता राजेन्द्र गढ़वाल कहते हैं कि पहले जंगल आम, आंवला, बेर, अचार, महुआ, जामुन जैसे फलदार वृक्षों से भरा था। लेकिन अब ये फलदार वृक्ष खत्म हो गए हैं। फिर से जंगल को हरा-भरा करना ज़रूरी है जिससे आदिवासियों को भूख और कुपोषण से बचाया जा सके। उनकी आमदनी बढ़ाई जा सके। इसके तहत अपने घरों के बाड़े में, खेत में, गांव की खाली ज़मीन पर तथा जंगल में पेड़ लगाए जा रहे हैं। सामूहिक रूप से आम, जाम, इमली, आंवला, बेर, जामुन, सीताफल, मुनगा, कटहल आदि पेड़ लगाए जा रहे हैं। बैतूल ज़िले में एक माह में 25 हज़ार पौधों का रोपण करने का लक्ष्य रखा गया है।

समाजवादी जन परिषद की नेत्री शमीम मोदी कहती हैं कि हम तो हर साल यह मुहिम चलाते हैं लेकिन वन विभाग का सहयोग नहीं मिलता बल्कि वे पेड़ों को ही उखाड़ देते हैं। उन्होंने चिचोली विकासखंड के पीपलबर्रा गांव का उदाहरण दिया, जहां वन विभाग और वन सुरक्षा समिति के लोगों ने पेड़ों में आग लगा दी थी। उनका कहना है अब तक अरबों रुपयों की वानिकी परियोजनाएं भी असफल साबित हुई हैं। अगर लोगों की ज़रूरत के हिसाब से वृक्षारोपण किया जाए तो इसके सकारात्मक नतीजे आएंगे।

इसकी तैयारी आदिवासी गर्मी के मौसम में ही शुरू कर देते हैं। बीजों को एकत्र करना, उनकी साफ-सफाई करना, भंडारण करना, पौध तैयार करना और फिर जंगल में लगाना। कुछ गांवों के लोग जंगल या नदी किनारे लगे आम के पेड़ों के नीचे उगे छोटे पौधों का वितरण करते हैं। आम के पेड़ ही ज़्यादा लगाए जा रहे हैं, क्योंकि ये आसानी से उपलब्ध हो रहे हैं। इसके अलावा, चीकू और काजू के पौधों का रोपण भी किया जा रहा है।

आदिवासियों का जीवन मौद्रिक नहीं, अमौद्रिक है। वे प्रकृति से सबसे ज़्यादा करीब से जुड़े हुए हैं। प्रकृति से उनका मां-बच्चे का रिश्ता है। वे प्रकृति से उतना ही लेते हैं, जितनी उनकी ज़रूरत है। वे पेड़-पहाड़ को देवता के समान मानते हैं। वे अपनी जिंदगी में प्राकृतिक संसाधनों पर

स्रोत सजिल्द

स्रोत के पिछले अंक

उपलब्ध हैं

ही निर्भर हैं।

लेकिन जंगलों में फलदार पेड़ कम होने से उनकी आजीविका और जीवन पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। उन्हें भूख और अभाव में कठिन दिन गुज़ारने पड़ रहे हैं। ये फलदार पेड़ और कंद-मूल उनके भूख के साथी हैं।

इस मुहिम से जुड़े मनाराम, सुखदेव, संतोष, रानू और शंकर कहते हैं कि पहले जंगल से हमें कई तरह के फल-फूल और कंद-मूल मिलते थे। महुआ, तेंदू, अचार, मैनर, आंवला आदि कई चीज़ें मिलती थीं। और ये सब निशुल्क उपलब्ध थीं। लेकिन अब नहीं मिलतीं।

जंगलों में फलदार वृक्ष कम होने के कई कारण हैं। एक तो जंगल में सागौन और बांस लगाए जा रहे हैं। दूसरा, जंगल में कुछ लोग लालचवश फलदार वृक्षों से कच्चे फल तोड़ लेते हैं। पकने से पहले ही उन्हें झड़ा लेते हैं। टहनियां भी तोड़कर फेंक देते हैं। इससे जंगलों में फलदार वृक्ष तेज़ी से कम हो रहे हैं। इन पर रोक लगना ही चाहिए। साथ-ही पौधे लगाकर जंगल को फिर से हरा-भरा करना भी उतना ही ज़रूरी है।

कुछ वर्ष पहले बोरी अभयारण्य में भी आदिवासियों ने फलदार वृक्षों को बचाने की मुहिम चलाई थी। यह अलग बात है कि अब इन्हीं आदिवासियों को जंगल में शेर पालने के नाम पर उजाड़ा जा रहा है। बहरहाल, इस नई पहल में न केवल जंगल के पेड़ों को बचाया जा रहा है बल्कि नए पेड़ लगाए जा रहे हैं। इससे पर्यावरण का सुधार और जैव विविधता का संरक्षण और संवर्धन भी होगा। आदिवासियों की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होगी। आदिवासियों की यह सकारात्मक व जनोपयोगी पहल सराहनीय होने के साथ-साथ अनुकरणीय भी है। ***(स्रोत फीचर्स)***